प्रथम अध्याय

से. रा. यात्री : व्यक्तित्त्व एवं् कृतित्त्व

1.1 से. रा. यात्री : व्यक्ति - परिचय

1.1.1 जन्म :-

किसी भी रचना को अथवा कृति को समझ लेने में उस रचनाकार या कृतिकार का परिचय होना निहायत जरुरी और सहाय्यक सिदध होता है । से.रा.यात्री के जीवन एवं् व्यक्तित्त्व का परिचय इसी उद्देश्य से यहाँ प्रन्तुत किया है । साठोत्तर काल के उल्लेखनीय उपन्यासकार तथा कहानीकार के रुप में यात्री बहुपरिचित हैं । यात्री का जन्म पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के जड़ौदा-पांडा नामक गाँव में 13 अगस्त 1933 में हुआ । "से.रा.यात्री का असली नाम सेवाराम अग्रवाल हैं ।"[1]

1.1.2 सेवाराम से बने से.रा. :-

से.रा.यात्री के नाम की कहानी बहुत ही अनोखी और दिलचस्प हैं । उनके जन्म के समय पंडित ने उनका नाम सेवाराम निकाला था, इसीलिए उनका नाम सेवाराम रखा गया । लेकिन उन्हें अपने नाम के तीनों टुकडे रास नहीं आये-न सेवा, न राम, न अग्रवाल । एक दिन हाईस्कुल का फॉर्म भरते समय उन्होंने अचानक अपना नाम सेवाराम यात्री भर दिया । हाईस्कूल के इम्तिहान के परिणाम घोषित होने पर उत्तीर्ण छात्रों की सूची में 'सेवाराम अग्रवाल' यह नाम न मिलने पर घर का माहौल एकदम तप्त बना । उस दिन घर में खाना भी नहीं बना । शाम को जब सेवाराम घर आये तो उन्होंने घोषित कर दिया कि वह इम्तिहान में अव्वल नंबर से पास है, और उसने अपना उपनाम बदल डाला है । तो अव्वल नंबर से पास होने की खुशी में उसको गले लगाने के बजाय बगैर पूछे नाम बदलने पर उनकी पिटाई हुई थी ।

यात्री पहले सेवाराम यात्री नाम से 1960 तक रचनाएँ करते थे । उस वक्त वे उपन्यास और कहानी नहीं लिखते थे, सिर्फ कविताएँ लिखकर ऑल इंडिया रेडिओ से ब्राडकास्ट करते थे । 1960 के जनवरी में यात्री इलाहाबाद गये तब वहाँ उपेंन्द्रनाथ अश्क ने उनके

नाम का काफ़ी मज़ाक उड़ाया और यात्री से कहा कि "मुझे सेवाराम नाम से कविता की दुनिया में स्वीकार नहीं किया जायेगा ।"[2]

उपेंद्रनाथ 'अश्क' की बात पर यात्री ने काफ़ी विचार किया लेकिन उन्हें कोई ठिक नाम नहीं सूझा । एक दिन यात्री अंग्रेजी में अपने हस्ताक्षर S.R.Yatri कर रहे थे तभी अचानक उनके मन में यह खयाल आया कि वे इस नाम से हिंदी के हस्ताक्षर करें तो कैसा रहे ? बस्स ! यह बात मन में आने की देर थी कि उनके हस्ताक्षर हिंदी में बन गये से.रा.यात्री । सेवा का से, राम का रा, यात्री ।

इसी दौरान यात्री ने अपनी पहली कहानी लिखी थी - 'गर्द और गुबार' जो राजकमल प्रकाशन के संपादक श्रेष्ठ कथाकार कमलेश्वर ने उनके प्रकाशन से निकलने-वाली 'नई कहानियाँ' पत्रिका में इस कहानी को यात्री द्वारा 'डिस्कवर' किये गये नाम से (से.रा.यात्री) ही छापा । उस कहानी के छपने पर यात्री इस कदर चर्चा में आ गये कि तत्कालीन सभी शीर्षस्थ पत्रिकाओं के संपादक यात्री को कहानी भेजने के लिए आग्रह करने लगे । इस तरह सेवाराम अग्रवाल से सेवाराम यात्री और सेवाराम यात्री से बने से.रा.यात्री । से.रा.यात्री लिखित "गर्द और गुबार' कहानी ने साहित्य की दुनिया में से.रा.यात्री के नाम की धूम मचा दी ।

1.1.3. पिता :-

यात्री के पिता पढ़े-लिखे नहीं थे । "मेरे पिता दुनियादारी के लिहाज से घोर अक्षम, अकुशल व्यक्ति थे ।"[3] यात्री के पिता सामाजिक परिवेश से कटे रहते थे । इतना ही नहीं पूरे दिन घर में बैंठे जेष्ठ पुत्र की कमाई को उड़ा देते थे । अनपढ़ होने के बावजूद पूजा-पाठ और किसी तरह की संध्या-उपासना करते थे । वे हुक्का पिने के आदि थे । रात को भोजन के बाद हुक्का लेकर बैठते थे । जब दिन-भर से थकीहारी दुनिया सोने लगती थी तब वह गाना शुरु करते थे । उनके गले में मिठास होने के कारण किसी को भी उनके गाने से तकलीफ नहीं होती थी । यात्री के पिता को रामायण सुनना और खास तौर से दशरथ विलाप और उसका मरण सुनना विशेष प्रिय था । कोई भी पढ़ा-लिखा लड़का उनके सामने आने पर उससे वे रामायण पढ़वाकर सुनाते थे । वास्तव जीवन में यात्री के पिता किसी भी प्रसंग पर करुणा व्यक्त नहीं करते थे या रोते भी नहीं थे, किन्तु दशरथ विलाप और उसके मरण का प्रसंग सुनकर उनकी आँखों में आँसु बहते थे ।

1.1.4. माता :-

यात्री के माँ और पिता की प्रवृत्ति में परस्पर विरोधी भाव रहते थे । जहाँ तक सामाजिक परिवेश से पिता कटे हूए रहते वहाँ माँ सबसे जुड़ी रहती थी । हर किसी के दु:ख-सुख में भागीदारी करती थी । यात्री की माँ को दमे की बीमारी होने के बावजूद भी वह दिन भर काम करती रहती और आधी रात तक चक्कर घिन्नी की तरह घुमती रहती थी । यात्री ने अपनी माँ को कभी आराम करते हुए नहीं देखा । घर के सारे काम उनकी माँ बगैर नहीं होते थे । इतना ही नहीं बच्चों के कपड़े वह हाथों से सिलवाती थी । वह अनेक अवसरों पर द्रवित हो उठती थी । रोगियों कों पथ्य देना और उनकी तीमारदारी करना उनके स्वभाव में था । रोगियों के निकट रहना या उनकी सेवा करने से यात्री की माँ को कोई परेशानी या भय नहीं लगता था ।

यात्री की माँ भावुक तथा कारुण्यमूर्ती थी । यात्री के माता-पिता में स्नेहलाप होते हुए यात्री ने कभी सुना नहीं था । बार-बार उन दोनों में झगड़े ही होते मगर यात्री की माँ का सहनशील स्वभाव होने के कारण वह पती की सारी बुराईयाँ सह लेती थी ।

यात्री के माँ का सन 1955 में देहावसान हो गया लेकिन उस वक्त यात्री के पिता की आँखों में उनकी मौत के आँसू भी दिखाई नहीं दिये ।

1.1.5. पारिवारिक स्थिति :-

यात्री के परिवार की स्थिति अत्यंत नाजूक थी । उनके पिता अनपढ़ होने के कारण कुछ कमाते तो नहीं थे किंन्तु जेष्ठ पुत्र द्वारा दुकान खोलकर देने पर वह सारा सामान उधार बेचकर दुकान खाली करके घर में बैठते थे । उन्होंने सारी जिंदगी पुत्र की कमाई को स्वाहा करने में गवाँ दी । यात्री का परिवार उनके बड़े भाई पर ही आधारित रहा । उनके भाई ने छोटी-मोटी नौकरी करके सब भाईयों को पढ़ाया और पूरे परिवार का पोषण भी किया । यात्री का पूरा परिवार गाँव में एक कृषक के साथ उनके एक लंबे कोठरे में रहता था । यात्री के बड़े भाई किसानों के जमीन की नाप तौल के कागजों का तपशील किसानों को लिखित रुप में देते थे, जिसके बदले में चार आणे तथा गुड़; गेहूँ, चना; दाल और भूसा आदि प्राप्त होता था । इसी के सहारे यात्री के घर परिवार की गुजर-बसर होती थी । यात्री के परिवार के सात सदस्य थे । यात्री के चार भाई थे । यात्री की माँ का देहांत पिता के देहांत के पहले छह: वर्ष हो चुका था ।

1.1.6. शिक्षा-दीक्षा :-

यात्री की प्रारंभिक बुलंद जिले के किर्रा गाँव के निकट खुर्जा नामक कस्बें में हुई थी । इसके साथ पहली और दूसरी की पढ़ाई एक प्राईमरी आर्य समाज स्कूल बलदेव आश्रम में हुई थी । इसी दौरान उनके भाई के मन में विचार आया कि यात्री को आयुर्वेद पाठशाला में भर्ती करके वैदयराज बनाये । इस छोटी उम्र में यात्री स्वंय निर्णय नहीं ले सकने के कारण भाई के कहने पर राजी हो गये और एन्.आर.पाठशाला में दाखिल हो गये । यात्री के उम्र का कोई विद्यार्थी वहाँ न होने पर वह उस वातावरण में अपने आप को ढ़ाल नहीं पाएँ, और न संस्कृत भाषा को ह्हदयंगम कर सके । वे संस्कृत पाठशाला में जा कर कुछ सिखने के बजाय उछलकुद करके थक जाने पर भोजन कर लेते थे । उनकी इस संस्कृत की प्रगति को देखकर गुरुजी ने उन्हें "यह बच्चा जनम भर संस्कृत नहीं सीख सकता"[4] यह कहकर वहाँ से निकाला । उनके भाई ने परम उत्साह और विश्वास से उन्हें फिर से राधाकृष्ण पाठशाला में दाखिल किया किंतु साल भर बाद वहाँ से यात्री को खारीज़ कर दिया ।

अब यात्री की पढ़ाई वहीं से आरंभ हुई जहाँ तीन वर्ष पहले छुट गई थी । उनके साथ पढ़नेवाले सहपाठी पाँचवी कक्षा पास कर चूके थे । जब यात्री तीसरी कक्षा में ही थे । गिरते-पडते एक वर्ष में दो-दो परीक्षाएँ पास करके यात्री जे.ए.एस. स्कुल में सातवी कक्षा में दाखिल हो गये । उसी हाईस्कूल की अंतिम परीक्षा पास करके यात्री एन.आर.ई.सी. कॉलेज में दाखिल हुए और वहीं से यात्री ने हिंदी साहित्य तथा राजनितीशास्त्र में एम.ए.पास किया । कॉलेज के दिनों में यात्री, प्रसिध्द कवि नरेंद्र शर्मा, तथा प्रसिध्द नाटककार जगदीशचंद्र माथुर की रचनाएँ पढ़ चुके थे । उनका थोड़ा-बहुत प्रभाव यात्री पर था ।

1.1.7. नौकरी :-

एम.ए. करने के पश्चात यात्री को तत्काल कहीं नौकरी नहीं मिली तो यात्री ने सागर विश्व विद्यालय में आचार्य नंददुलारे वाजपेयीजी के निर्देशन में शोध कार्य करना शुरु किया, लेकिन कुछ महिनों के उपरांत यात्री को नरसिंहपुर कॉलेज में अध्यापन करने का अवसर प्राप्त हुआ । नरसिंहपुर का कॉलेज नया-नया शुरु हुआ था । यात्री को वहाँ पहुँचने के बाद पता चला कि कॉलेज का प्रबंधक महाकपटी और धूर्त होने के साथ-साथ वह शिक्षकों को वेतन ही नहीं देता । यात्री किसी तरह नरसिंहपूर एक साल बड़े

कष्ट के साथ काट कर वह नौकरी छोड़ दिल्ली चल पडे । वहीं दिल्ली में नौकरी की तलाश में भटकते हुए यात्री लिखने की ओर प्रवृत्त हो गये । गत 35 वर्षे से गाज़ियाबाद के स्थानीय महानंद मिशन कॉलेज में अध्यापन कार्य करते हुए आने वाली पीढ़ी को उज्वल भविष्य की ओर अग्रसर करके सेवानिवृत्त हो चुके हैं ।

1.2. व्यक्तित्त्व की विशेषताएँ :-

1.2.1 बहिरंग व्यक्तित्त्व :-

यात्री का संपूर्ण व्यक्तित्त्व हँसमुख एव् आकर्षक है । बहिरंग व्यक्तित्त्व की दृष्टि से देखे तो निहायत गोरा रंग, उँचा कद, काले बाल, चोंगे की तरह लंबा कद, निष्कपट चेहरा, ममत्व से भरी आँखे, बदनपर घुटनों से नीचे तक सफेद कुर्ता, ढीला पाजामा, कंधे पर समाजवादी झोला, पीछे-पीछे कुत्तों की बड़ी कतार इन सब खुबियों के साथ गाजियाबाद की किसी सड़क पर लंबे -लंबे डग भरता हुआ, अपनी ही मस्ती (धुन) में जानेवाला आदमी दिखाई दिया तो यह समझ लेना चाहिए कि वहीं से.रा.यात्री है । यात्री का बाहर से जितना हँसमुख व्यक्तित्त्व है, भीतर से भी उतना ही हँसमुख है । यात्री का चेहरा भी ताजगी भरा है । उनके चेहरे को देखकर प्रसन्नता महसुस होती है । बड़े लेखकों के बारे में कहा जाता है कि वह कहते कुछ है और करते कुछ और है, परंतु यह बात यात्री के संदर्भ में नहीं है । यात्री के बारे में रवींद्र कालिया लिखते है — "से.रा.एक खुली किताब है । से.रा. के जो दिल में है वह उसके लब पर भी हैं ।"[5]

यात्री एक अत्यंत संवेदनशील और मानवसुलभ भावना से युक्त, स्पष्टवादी इन्सान है । बड़ों का सम्मान करना और उनका आशिर्वाद पाने में यात्री का विश्वास है । वह सब से मित्रतापूर्ण व्यवहार करने में सक्षम है । से.रा.यात्री का बहिरंग व्यक्तित्व निश्चय ही प्रभावी है ।

1.2.2. अंतरंग व्यक्तित्त्व :-

1.2.2.1. बुद्धिमान :-

यात्री का परिवार गरीब था । परिवार की आर्थिक स्थिति भी संतोषजनक नहीं थी । उनके बड़े भाई ने नौकरी करके सबको पढ़ाया - लिखाया ।

यात्री ने गिर-गिर खड़े होने की लगातार कोशिश करके अपना एक स्थान बनाया है । कॉलेज के दिनो से ही यात्री कविताएँ लिखते थे । उनकी कविताएँ ऑल-इंडिया रेडिओ से ब्राडकास्ट की जाती थी, इसी से उनकी कविता की श्रेष्ठता सिद्‍ध होती है । इसी से यह स्पष्ट होता है कि यात्री ने अपनी जगह बनाने के लिए बुद्धिमानता का सही उपयोग किया है । यात्री हिंदी साहित्य तथा राजनीतिशास्त्र में एम्. ए. कर चुके हैं ।

1.2.2.2. प्रतिमा संपन्न :-

मनुष्य जन्मत: कुछ गुणों को लेकर इस जग में पैदा होता है । जिसमें से एक गुण है 'प्रतिभा' । आदमी की सृजनशील वृत्ति का नाम प्रतिभा है । यात्री नौकरी की तलाश में भटकते हुए लिखने की ओर प्रवृत्त हो गये । 1960 के आस पास से उन्होंने काव्य-लेखन शुरु किया । अपने प्रतिभाशाली शब्दों को कथा और उपन्यास में बद्‍ध कर के अपने दिल की बात पाठकों के सामने उजागर की है । मानवी जीवन की जटिलता को अपनी प्रतिभा से जोड़कर यात्री ने साहित्य की दुनिया में अपना रास्ता तैयार किया है । साहित्य की दुनिया मे यात्रीजी की प्रतिभा उपन्यास से भी अधिक कहानी की ओर झुकी हुई लगती है । उपन्यास और कहानी लेखन के रुप में हिंदी साहित्य में यात्रीजी का योगदान बहुमूल्य है ।

1.2.2.3. कवि -

से.रा.यात्री वर्तमान दौर में हिंदी के एक श्रेष्ठ उपन्यासकार तथा कथाकार के रुप में सुपरिचित है । यात्री मुलत: कवि हैं । १९६४ तक वे सेवाराम यात्री नाम से कविताएँ लिखते थे और उनके सेवाराम यात्री का से.रा.यात्री में नामकरण हो गया । उनके इस नये नाम से (से.रा.यात्री) उनकी पहली कहानी 'गर्द और गुबार' छपी जिसने यात्री को सफलता के शिखर पर पहुँचा दिया । बाद में उन्होंने कोई कविता नहीं लिखी । वे उपन्यासकार और कहानी तथा कथाकार से.रा.यात्री बन गये । अपने बारें में यात्री कहते है — "मेरा कवि कहानियों तथा उपन्यासों में जीवित हो गया । भले ही मैं कहानी और उपन्यास लिखता हूँ पर मैं मूलत: स्वयं को कवि ही मानता हूँ ।"[6]

1.2.2.4. अच्छे मित्र :-

यात्री के जीवन में उनके मित्रो का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है । यात्री का मैत्री के बारे में अपना एक सुत्र है कि वे अपने हम उम्र लोंगों से कभी मैत्री नहीं रखते । उनके सारे मित्र उनके अपने उम्र से बीस बरस बड़े है या बीस बरस से छोटे । यात्री की मोहन राकेश के शिष्य राजेंद्र यादव से मित्रता थी । यात्री के कई मित्र थे और हैं भी मगर यात्री के एक स्थायी यार है उपेंद्रनाथ 'अश्क' उनकी 'अश्क' के साथ इतनी घनिष्ठ मित्रता हैं कि वह अश्क की बुराई नहीं सुकने । यात्री की कमलेश्वर से भी काफ़ी घनिष्ठ मित्रता थी । यात्री के बीस बरस छोटे मित्र भी कम नहीं है । ऐसा ही एक यात्री का दोस्त था - सुदर्शन महाजन । वह युनियन बँक ऑफ इंडिया में नोकरी करता था । सुदर्शन यात्री का इतना घनिष्ठ मित्र बन चुका था कि उसके से.रा. यात्री के सभी लेखक मित्रों से खुद् के संबंध प्रस्तापित करने की कोशिश करता था । वह गाजियाबाद से इलाहाबाद एक नौकरीपेशा आदमी के रुप में आया था मगर इलाहाबाद से एक नवोदित कहानीकार के रुप में विदा हुआ । यात्री के दुसरे छोटे दोस्त का नाम है, विभूतिनारायण रॉय, जिसके साथ रहकर यात्री ने वर्तमान साहित्य पत्रिका निकाली थी । इसतरह यात्री अपने से बड़ों के और छोटों के अच्छे मित्र बन जाते थे । यात्री के बारे में रवींद्र कालिया कहते है — वह 'दोस्ती निभाता नहीं दोस्ती जिता है ।'[7]

1.2.2.5. ईमानदार :-

मनुष्य में ईमानदारी का गुण होना आवश्यक होता है । यात्री पूरी तरह ईमानदार हैं । अपने जीवन के और अपने साहित्य के प्रति वे ईमानदार हैं । इतना ही नहीं अपने जीवन में घटित घटनाओं को भी ईमानदारी से पाठकों के सामने रखने में वे हिचकिचाते नहीं । अपने जीवन की व्यक्तिगत तथा परिवारीक बातें भी स्पष्ट रुप से बताते है । झूठ बोलना उनके स्वभाव में नहीं है । यहाँ तक कि उन्होंने अपने पिता के निकम्में होने की कड़वी सचाई भी पाठकों के समक्ष स्पष्ट रुप से प्रस्तुत की है ।

हर साहित्यकार को अपने साहित्य के प्रति ईमानदारी रखना बहुत जरुरी है मगर ऐसे साहित्यकार बहुत कम नजर आते है । से.रा.यात्री अपने साहित्य के प्रति ईमानदारी प्रस्थापित कर चुके हैं । आदमी, आदमी का जीवन, उसकी मानसिक तथा आर्थिक समस्या को उन्होंने अपने साहित्य में प्रथम स्थान दिया है, अपनी कलाकृति पूरी निष्ठा से वे बनाते हैं, जिसमें दुनिया में

जीते समय आदमी जिन-जिन समस्याओं से टकराता है वे समस्याएँ वे(यात्री) चकांचक आइने की तरह पाठकों के सामने उजागर करते हैं।

1.2.2.6. मानव-सुलभ भावना से युक्त -

इंन्सान को इंन्सान कहने के लिए स्वाभिमान, त्याग, करुणा, ईमानदारी आदि गुण अति आवश्यक होते है, ये सभी गुण, यात्री में मौजुद हैं । यात्री का व्यक्तित्त्व मानव-सुलभ भावना से युक्त है । करुणा यात्री के जीवन का स्थायी भाव बन चुका है ।

गाजियाबाद में अपनी इसी करुणा ने यात्री ने अच्छी-खासी श्वान-सेना तैयार की है । यात्री बाहर जाते समय अपने झोले में कई रोटियाँ ले जाते है । थोड़ी-थोड़ी देर से वह रोटियाँ कुत्तों को फेंकते जातें है । गाजियाबाद के कुत्ते भी उसे देखते ही दुम हिलाते है । उनकी श्वान-सेना के बारें में रवींद्र कालिया बड़े मजे में लिखते हैं कि — "से.रा.यात्री ने गाजियाबाद भर के कुत्तों को पटा लिया है इसीलिए मैं संपादक मित्रों से हमेशा कहा करता हुँ कि वे गाजियाबाद जाये तो यात्री से उलझने की कोशिश न करें । जहाँ तक हो सके, उसकी कहानियाँ छापते रहे, क्योंकि पेट में बीस सुईयाँ लगवाने से कहीं सस्ता और आसान है यात्री की कहानी छाप देना ।"[8] यात्री समस्त गाजियाबाद के कुत्तों का अन्नदाता हैं । बीवी अगर कुत्तों के लिए रोटियाँ न बना दें तो वे किसी होटल से रोटिया खरीदकर कुत्तों को खिलाते हैं । जब वे शहर से बाहर जाते है, तो कुत्तों के बारें में ही सोचते हैं । उनका पालतु कुत्ता उनके घर लौटने तक भूख-हड़ताल कर देता है ।

यात्री कहीं पर भी अन्याय बर्दाश्त नहीं कर सकते । नरसिंहपुर कॉलेज का प्रबंधक शिक्षकों को वेतन नहीं देता यह जानकर उनके साथ लड़कर यात्री ने नौकरी छोड़ दी थी । वह अपने जीवन में तथा साहित्य के प्रति ईमानदार हैं । यात्री अपने जीवन में दोस्तों की काफी मदद करते हैं । इसी से एक मनुष्य होने के नाते यात्री में मानव-सुलभ सभी भावनाएँ दिखाई देती हैं ।

1.2.2.7. संवेदनशील व्यक्तित्त्व :-

यात्री एक संवेदनशील तथा भावनामयी व्यक्तित्त्व है । अपनी माँ के प्रति उन्हें बहुत प्यार हैं । कुत्तों जैसे मूक जीव के प्रति भूत दया भाव रखते हूए उन्हे पालनें पर उनका मन खुश होता हैं । अपनी कहानी द्वारा मध्यमवर्गीय इंन्सान की पीड़ा को

पाठकों कें सामने प्रस्तुत करने का वे अच्छा प्रयास करते है । नारी कें प्रति आदरभाव रखकर बड़ी सहृदयता से नारी की पीड़ा का बर्णन अपनी कहानी तथा उपन्यास में करते है युवावर्ग के संवेदनशील मन को, उनकी समस्या को समझ लेने का प्रयास करते हैं ।

ममता कलिया की माँ बीमार थी, तो से.रा.यात्री उनकी सेवा-सुश्रुषा में लगे रहे । जब ममता की माँ का देहावसान हो गया तो उनके चेहरे पर अवसाद की गहरी रेखाएँ खींच आयी थी । उसने शायद जीवन में पहली बार किसी शव का स्पर्श किया था । यह याद करते हुए यात्री रो पड़े कि ममता की माँ कैसे उसकी आवभगत करती थी । जब यात्री दोस्तों से घिरे होते है, तो उनके जीवन के वे सबसे सुखद क्षण होते है । किसी भी घर में जब वे मेहनमान बन कर जाते है, तो कुछ इस तरीके से वहाँ के बच्चो में घुलमिल जाते हैं कि कुछ देर बाद वहाँ के लोगों को मेहमान बनाकर छोड़ देते है । अर्थात यात्री संवेदनशील, भूतदयाप्रेमी, परदु:ख कातर व्यक्ति हैं ।

1.2.2.8. व्यंग्यकार -

यात्री एक उत्कृष्ठ व्यंग्यकार भी हैं । किस्सा एक खरगोश का यह उनकी व्यंग्यरचना है । इस व्यंग्य रचना में अनेक छोटी-छोटी घटनाओं के माध्यम से आम आदमी को पीड़ा, कष्ठ देनेवाली बातों की ओर उन्होंने संकेत किया हैं। अपने व्यंग्यसंग्रह में चित्रित घटनाओं से अनैतिकता के विरोध में व्यंग्य किया हैं । 'दुध से वेदांत तक' में दुधवाले की अनैतिकता को दर्शाया है । सरकार और आम आदमी के बीच के माहौल का चित्रण 'जमाखोरी के विरुध्द में' में बहुत ही अच्छा किया हैं । तो 'नौतिकता कारोबार' में पांखंडियों के ढोंग का पर्दाफाश किया है। 'किश्तों में बँटी महानताएँ' में पुलिस विभाग की नाकर्मी दिखाई है । 'कोई और थे कर्ज की पीते थे जो' में उन इन्सानो पर व्यंग्य किया है, जो हर किसी से कर्जा लेता है, मगर उस कर्ज को या उधार को न चुकाने के लिए बहाने दूँढता है ।

ऐसी अनेक छोटी-छोटी घटनाओं से जुड़कर किस्सा एक खरगोश का इस व्यंग्यरचना का निर्माण हुआ है । व्यंग्यकार से.रा.यात्री के बारें में हिरे लिखते है — "उपन्यासकार एवं् कथाकार यात्रीजी व्यंग्य और वह भी परसाई जैसे लेखकों के समान लिख सकते हैं । का सबुत किस्सा एक खरगोश का यह संकलन है ।"[9]

1.3. से.रा.यात्री का कृतित्त्व :-

से.रा.यौत्री के कृतित्त्व को बारीकी से देखने पर स्पष्ट होता है कि वे बहुमुखी प्रतिभा के मालिक हैं । उन्होंने हिंदी कहानी, उपन्यास और व्यंग्य आदि क्षेत्रों में अपना एक वजूद कायम किया है । यात्री आरंभ में मुलतः एक कवि है, जो बाद में कहानीकार तथा उपन्यासकार के रुप में हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ उपन्यासकारों की तथा कहानीकारों की पंक्ति में जाकर बैंठे गये । पश्चिमी उत्तर प्रदेश में यात्री एक श्रेष्ठतम तथा उच्च कोटी के लेखक के रुप में लोकप्रिय तथा सुपरिचित हैं । यात्री के अनेक उपन्यासों का तथा कहानियों का प्रसिदध साप्ताहिकों में धारावाहिक प्रकाशन हुआ है । यात्री ने अनेक कृतियों का हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में अनुवाद भी किया है ।

"प्रेमचंदजी के बाद आम आदमी के अभावों और छोटी-छोटी खुशियों में जीने की ललक लिए इन्सानों की कहानियाँ लिखने वालों में यात्रीजी का नाम सबसे ऊपर हैं ।"[10]

यात्री की पहली कहानी 'गर्द और गुबार' 1959 में 'नई कहानियाँ' में छपी जिसकी बदौलत यात्री हिंदी साहित्य में सफल कथाकार माने जाने लगे । यात्री ने कई कहानीसंग्रह, उपन्यास, व्यंग्य, संस्मरण, आदि रचनाओं का निर्माण किया है । 1971 में यात्री का 'दुसरे चेहरे' नामक पहला कहानीसंग्रह प्रकाशित हुआ । यात्री की कहानियो में मध्यमवर्गीय इन्सानो के स्वभाव, उसके संस्कार, और उसकी आदतों के साथ इस वर्ग की पीड़ा की ओर संकेत किया हैं । यात्री ने अपनी कहानियों द्वारा आर्थिक विषमताओं से उत्पन्न पीड़ा, चिंता, विवशता, समझौता आदि सब के विरुदध जुझते हुए युवकों, अध्यापको, बेरोज़गारों की सही तस्वीर पाठकों के समक्ष उजागर की है ।

यात्री की कहानियों में कस्बें तथा छोटे-छोटे शहर के मध्यवर्ग का वर्णन मिलता हैं । यात्री के बारें में एम्.बी.हिरे लिखते है — "प्रेमचंद के बाद के वे एक अच्छे कथा शिल्पि हैं । छोटी-सी घटना को किसी बड़े हादसों में बदलने की क्षमता रखते है ।"[11]

संक्षेप से.रा.यात्रीजी कृतित्त्व निम्नप्रकार का है ।

1.3.1. कहानी संग्रह :-

1)	दूसरे चेहरे	: नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद :	1971
2)	अलग-अलग अस्वीकार	: भावना प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली	1973
3)	काल विदुषक	: भावना प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली	1976
4)	धरातल	: पराग प्रकाशन, दिल्ली	1977
	केवल पिता	: राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	1978
6)	सिलसिला	: अलोक प्रकाशन, दिल्ली	1979
7)	अकर्मक क्रिया	: निधि प्रकाशन, काश्मीरी गेट, दिल्ली	1981
8)	टापू पर अकेले	: मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ	1983
9)	खंडित संवाद	: अमित प्रकाशन, गाजियाबाद (उ.प्र.)	1985
10)	नया संबंध	: आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली	1987
11)	भाव तथा अन्य कहानियाँ	: साहित्य प्रचार, दिल्ली	1993
12)	अभयदान	: साहित्य प्रचार दिल्ली	1994
13)	चर्चित कहानियाँ	: सामायिर प्रकाशन, जटवाडा, नई दिल्ली	1995
14)	पूल टुटते हुए	: आत्माराम एंड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली	1996
15)	बहुरुपिया	: साहित्य प्रचार, दिल्ली	1998
16)	खारिज और बेदखल	: किताबघर प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	1998

1.3.2. उपन्यास :-

यात्री एक सफल कहानीकार होने के साथ-साथ एक सफल उपन्यासकार भी हैं, अपितु यात्री की कहानी. में जिस तरह निम्न-मध्यवर्ग के आम आदमी की तस्वीर को दर्शाया गया हैं, उसका संपूर्णत: अभाव उनके उपन्यास में हैं । कहानी में उन्होंने आम आदमी को एक भोक्ता के रुप में रखा हैं, तो उपन्यास में कहानी का आम आदमी अभिजात्य वर्ग में बदल गया है । यात्री ने अपने उपन्यासों का वातावरण भी पहाडों की वादियाँ हैं, जो आम आदमी के लिए सिर्फ सपना बनी हुई हैं ।

उनके उपन्यास कथ्य एवं् शिल्प की दृष्टि से सुंदर बन पड़े है । यात्री के उपन्यास निम्नंकित है ।

1)	दराजों में बंद दस्तावेज	: रचना प्रकाशन, इलाहाबाद	1969
2)	लौटते हुए	: भावना प्रकाशन, लक्ष्मीनगर, दिल्ली	1974
3)	चांदनी के आर-पार	: पंकज प्रकाशन, दिल्ली	1978
4)	बीच की दरार	: भावना प्रकाशन, दिल्ली	1978
5)	कई अंधेरों के पार	: राजपाल एंड सन्स, नई दिल्ली	1981
6)	टुटते दायरे	: प्रभात प्रकाशन, दिल्ली	1983
7)	चादर के बाहर	: निधि प्रकाशन, काश्मीरी गेट, दिल्ली	1983
8)	प्यासी नदी	: सरस्वती विहार, दिल्ली	1983
9)	भटका मेघ	: साहित्य प्रचार, दिल्ली	1984
10)	आकाशचारी	: कर्ण प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली	1985
11)	आत्मदाह	: साहित्य प्रचार, कृष्णनगर, दिल्ली	1985
12)	बावजूद	: निधि प्रकाशन, काश्मीरी गेट, दिल्ली	1986
13)	एक छत के अजनबी	: वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	1986
14)	अत्तदिन	: भावना प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	1987
15)	प्रथम परिचय	: राजपाल एंड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली	1987
16)	युद्धविराम	: जनप्रिय प्रकाशन, विश्वासनगर, दिल्ली	1987

17)	जली रस्सी	: पांडुलिपि प्रकाशन, कृष्णनगर, दिल्ली	1987
18)	दिशाहारा	: सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली	1988
19)	अपरिचित शेष	: सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली	1988
20)	बेदखल अतीत	: प्रेम प्रकाशन मंदिर, दिल्ली	1993
21)	आखिरी पडाव	: भावना प्रकाशन, दिल्ली	1993
22)	सुबह की तलाश	: आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली	1994
23)	घटनासुत्र	: साहित्य प्रचार, बल्लीमारान दिल्ली	1996
24)	घर ना घाट	: आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली	1997

उपर्युक्त उपन्यासो में सें दो उपन्यासों का नये नामों से जो प्रकाशन हुआ है वह निम्न प्रकार से है ।

	मूल नाम	**नया नाम**
1)	बीच की दरार (1978)	बनते-बिगड़ते रिश्ते (1982)
2)	अनजान राहों का सफर (1980)	प्यासी नदी (1983)

1.3.3. व्यंग्यसंग्रह

1) किस्सा एक खरगोश का - साहित्यसहकार- दिल्ली : 1985

1.3.4. संस्मरण

मिलना एक वाकिफ उम्रसे - आत्माराम एण्ड संन्स, दिल्ली : 1998

1.3.5. संपादन

1) विस्थापित (कथासंकलन) : भावना प्रकाशन, नई दिल्ली : 1981

2) वर्तमान साहित्य (पत्रिका) : इलाहाबाद

निष्कर्ष :-

से.रा.यात्री के व्यक्तित्त्व एवं् कृतित्त्व का अध्ययन करने के पश्चात मैं इस नतीजे पर पहुँची हुँ कि यात्री का व्यक्तित्त्व सुस्वभावी, सरल, स्पष्टवादी और पारदर्शी हैं । सही मानों में यात्री पूर्णत: एक खुली किताब हैं । यात्री अपनी रचनाओं में जिन आदर्शा तत्वों का निरुपण करते है, वास्तव जीवन में भी उन्हीं तत्वों का पालन करते है । यात्री के दिलो दिमाग में जो बात होती हैं उसे अपने मन चक्षु से अपने कहानी, उपन्यास के पात्रों के माध्यम से सर्जीव कर देते है । अपने उपन्यास तथा कहानी के माध्यम से उन्होंने निम्न-मध्य वर्ग के सुख-दु:ख, लाचारी, बेबसी आदि का वास्तव चित्रण किया हैं । उनकी कहानियों में एक-दूसरे से ईर्ष्या, कुंठा, आदि से मनुष्य के मन में जो दोष या निष्क्रियता आदि भावनाएँ निर्माण होती है, उसी का ज्यों-का-त्यों चित्रण उनकी रचनाओं में मिलता हैं । यात्रीजी ने मनुष्य के जीवन की विसंगती को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया हैं ।

से.रा.यात्री अभागग्रस्त परिवार में पले परंतु इसी अभाव ने उनके जीवन में कुत्सितता का निर्माण नहीं किया हैं । उनका जीवन उबड़-खाबड़ धरती पर पड़े हुए बीज के समान लगता है जो प्रतिकूलता में भी फलता-फूलता रहा हैं और अपने फल-फुल दूसरों को दे रहा हैं । यात्री की पूरी जिंदगी गतिशील है, इसमें ठहराओं के बावजूद भी उर्ध्वगामिता अधिक देखने को मिलती हैं । वे मातृभक्त हैं, उनका रहन-सहन सादगी पूर्ण हैं, समझौताशील व्यक्ति होने पर भी अन्याय-अत्याचार के साथ समझौता नहीं करते हैं । उनके विचारों में उदारता और निम्न-मध्य वर्ग के प्रति सहानुभूति के दर्शन होते हैं । उनकी जिंदगी का प्रारंभिक चरण देहातों से जुडा होने के कारण किसान, मजदूर, दलित, छोटे-छोटे कस्बे के लोगों से उनका संबंध रहा हैं । आज भी इन लोगों से वे सहजता के साथ मिल सकते हैं । इन लोगों की जिंदगी के प्रति उन्हें दिलचस्पी हैं । अत: उनके जीवन में न महानगरीय तेजी हैं, न कुंठा हैं । वे सभी साहित्यिक आंदोलनों से दूर रहे हैं । शायद यहीं कारण हो सकता है कि वे नई कहानी आंदोलन से न जुड़े होने के कारण उनके लेखन को तत्काल रेखांकित नहीं किया गया होगा । वे खुद को सही लेखक मानते हैं इसीलिए इन आंदोलनों में शामिल होने की जरुरत नहीं मानते हैं । धर्म, दर्शन, राजनीति तथा अर्थ के बारें में उनकी रुचि नहीं रही है । से.रा.यात्री का लेखन यह आजीविका का साधन नहीं है । उनके साहित्य के प्रेरक अश्क और कमलेश्वर हैं । लेखक यात्री के कृतित्त्व

में स्वस्थ सामाजिक दृष्टिकोण उभर उठा है और उन्होंने मार्क्सवादी दृष्टिकोण के मानवी पक्ष को स्वीकार किया है । नई-नई स्थितियाँ उन्हें साहित्य-सृजन के लिए प्रेरणा देती रही है । बाह्यजीवन की विविधता से उनकी मानसिकता में गति पैदा होती है, जिनसे उनमें लिखने की गति पैदा होती हैं । वे विनम्रता से अपनी तुलना किसी अन्य साहित्यिक से करना पसंद नहीं करतें । मूल लेखकीय संवेदना को वे महत्त्व देते हैं इसीलिए टेकनीक की तरफ उनका दुर्लक्ष हो जाता हैं । वे योजना बनाकर लेखन करने के पक्षधर नहीं हैं । उनके कृतित्त्व में उनके व्यक्तित्त्व के प्रतिबिंब देखने को मिलते हैं ।

स्पष्ट है कि से.रा. यात्री प्रतिकूल परिस्थिति में पले, प्रतिकूलता में शिक्षा-दिक्षा लेते रहे, वे प्रतिभासंपन्न लेखक बने, ईमानदार और अच्छे मित्र बने रहे, मानवसुलभ भावनाओं से क्रेंद्रीत रहे, संवेदनशीलता से ओतप्रोत रहे । यात्री का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व बहुआयामी लगता हैं । से.रा.यात्री प्रमुखत: कथाकार के रुप में साहित्य क्षेत्र में सर्वश्रुत हैं । गत 22 सालों से यात्री ने साहित्य क्षेत्र में अपना योगदान दिया है । आपने लगभग 200 कहानियाँ और 24 के आसपास उपन्यासोंका सृजन किया है किंतु आलोचकों की दृष्टि से यात्री उपेक्षित रह गये । जीवनवादी तथा मानवतावादी दृष्टि से इंन्सान के दु:खों की तलाश करने के लिए यात्री ने अपना साहित्य सृजन किया है ।

से.रा.यात्री पहले कवि थे किंतु कविता और उपन्यासों की अपेक्षा आपने ज्यादा कथा साहित्य का सृजन किया है । लगभग सभी साहित्य पत्रिकाओं में आपने कहानी लेखन किया है । यात्री का व्यक्तित्त्व देखने पर यह महसूस होता है कि यात्री पारिवारिक ममत्त्व से हमेशा उदासिन रहे है । यात्री हमेशा अपने मित्र परिवार में घुल-मिल जाते थे । मूक प्राणियों पर अपनी जान न्योछावर कर देते थे इससे उनकी संवेदनशीलता का परिचय मिलता है । यात्री अपने परिवार के बारें में विस्तार से कुछ भी नहीं बताते लेकिन उनके जो खयाल है वे पूर्णत: यथार्थ और स्पष्ट हैं। उत्तम गायक और रामायण - महाभारत में रुचि रखने वाले अपने पिता के प्रति उन्हें आदर हैं फिर भी उनके पिता का निकम्मा रहना उन्हें अच्छा नहीं लगता था ।

यात्री की माँ की तरफ देखने की दृष्टि अत्यंत भावुक और संवेदनशील है । उनकी माँ ने सब के लिए जो संघर्ष, मेहनत की और कितने दु:खों को सहा है इसका यात्रीजी को एहसास है । उन्हें अपनी माँ के प्रति असीम आदर हैं। यात्री के स्वभाव में माता और पिता दोनों के ही गुणों का समन्वय हुआ है । माँ की तरफ से उन्हें अत्यंत संवेदनशील मन मिला है तो पिता की तरफ से एकांतप्रिय स्वभाव ।

यात्री अपनी दोस्ती के लिए काफ़ी मशहुर हैं । यात्री हमेशा अपने से 20 साल बड़े या 20 साल छोटे व्यक्ति से ही दोस्ती करते है । आपने हिंदी और राजनीतिशास्त्र इन विषयों में एम्.ए. किया हैं। नौकरी मिलने पर उन्होंने संशोधन करने का खयाल छोड़ दिया ।

आज समाज पर भ्रष्टाचार, बुराई का जो असर पड़ा है, उससे मनुष्य अपना मानवता धर्म ही भूल बैठा है, यह देखकर यात्री का मन व्यथित हो उठता है। आज कल छोटे बच्चों को जो टी. व्ही. सिनेमा कॉमिक्स पढने और देखने का जो चस्का लगा है इससे यात्री को दु:ख तो होता हैं लेकिन 3 साल के बच्चें के हाथ में भारी भरकम बॅग देखकर शिक्षा के क्षेत्र में जो कुंठा निर्माण हो रही है इससे यात्री का मन बेचैन होता है । समाज के प्रति अपना कर्तव्य इन्सान भूल रहा है । आज मनुष्य ने अपने आप को चार दीवारों मे बंद कर लिया है यही वजह है कि आज नई पीढ़ी के सामने कोई आदर्श ही नहीं है । आज के पीढ़ी की यह दीन अवस्था ही यात्री के साहित्य सृजन का विषय बन जाती हैं ।

यात्री पहले कवि थे । यात्री के कथासाहित्य की ओर देखने पर ऐसा लगता है कि उनकी कविताओं के आश्रय में ही उनकी कहानी पली और बढ़ी हुई लगती है । 'सांझ के साये,' 'दिशाहारा,' 'पाँच मिनट,' 'दलदल,' 'एक कोई और अतित' जैसी कहानियाँ देखने पर उनके प्रगल्भ कवि मन का प्रत्यक्ष दर्शन होता है । छोटी-छोटी घटना को भावनाशीलता, संवेदनशीलता के आभुषणों से सज्ज उनकी कहानी पाठकों के मन पर अपनी अमीट छाप छोंड़ जाती हैं ।

कहानियों की अपेक्षा यात्री ने उपन्यासों का भी निर्माण किया जो उपन्यास पाठकों पर हावी हुए हैं । कई साहित्यकारों से उपेक्षित रहे सवालों को यात्री ने बड़े कौशल से अपने उपन्यास में उठाया हैं । समाज में जो व्यथा, उपेक्षा, शोषण दिखाया है, उनको ही यात्री ने उपन्यासों का विषय बनाया हैं, फिर चाहे वह 'दराजों में बंद दस्तावेज' की 'करुणा' हो जो अपने ही रिश्तेदारों के शोषण का शिकार बनती है या फिर अपने ही पती के अत्याचार से पीड़ित 'बीच की दरार' की 'नीना' हो ।

उपन्यास के कथ्थ से प्रामाणिक रहकर ही यात्री ने साहित्य का निर्माण किया है । समाज में स्थित सवालों का विज्ञापन न करके उपन्यास का विषय और आशय दोनों का सुंदर समन्वय स्थापित किया है । से.रा.यात्री उपन्यास लिखते समय वास्तवता का आभास

बड़े कौशल से रखते है और सामाजिक सवालों का निरुपण करते हैं । उनका 'लौटते' हुए उपन्यास देखने पर यह समझ में आता है कि उच्चशिक्षित होने पर भी नौकरी नहीं मिलती यह समाज की कड़वी सचाई यात्रीजी निडरता से स्पष्ट करते हैं ।

संदर्भ सूची :-

1) कालिया रवींद्र - सृजन के सहयात्री - किताबघर प्रकाशन, दिल्ली. प्र.सं.1996 पृ. 33

2) से.रा. यात्री का पत्र - दि.15 जनवरी 1999

3) डॉ.हिरे एम्.बी. - कथाकार से.रा.यात्री : व्यक्तित्त्व एवं् कृतित्त्व-अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर प्र.सं. 1993 पृ.21.

4) वही - पृ.20

5) कालिया रवींद्र - सृजन के सहयात्री - किताबघर प्रकाशन, दिल्ली. प्र.सं.1996 पृ. 35

6) से.रा. यात्री का पत्र - दि.15 जनवरी 1999

7) कालिया रवींद्र - सृजन के सहयात्री - किताबघर प्रकाशन, दिल्ली. प्र.सं.1996 पृ. 31

8) वही - पृ.31.

9) डॉ.हिरे एम्.बी. - कथाकार से.रा.यात्री : व्यक्तित्त्व एवं् कृतित्त्व-अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर प्र.सं. 1993 पृ.287.

10) वही - पृ.32.

11) वही - पृ.33.